''सनातन संस्कृति समागम – राम राज्य की ओर'' एवं ''वामनेश्वर श्री राम कर्मभूमि तीर्थ क्षेत्र महाकुंभ एवं अन्तर्राष्ट्रीय संत सम्मेलन'' में महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान का सम्बोधन

(दिनांक 15.11.2022, समय– अप० 01.30 बजे, स्थान– अहिल्या धाम, अहिरौली, बक्सर)

सिद्धाश्रम, बक्सर में आयोजित ''सनातन संस्कृति समागम –राम राज्य की ओर'' तथा ''वामनेश्वर श्री राम कर्मभूमि तीर्थक्षेत्र महाकुंभ एवं अन्तर्राष्ट्रीय संत सम्मेलन'' में शामिल होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

सर्वप्रथम मैं मर्यादा पुरूषोत्तम प्रभु श्री राम के चरण रज से अनुप्राणित बक्सर की पावन भूमि को प्रणाम करता हूँ। सिद्धाश्रम, बक्सर भगवान श्री राम की प्रथम कर्मभूमि रही है, जहाँ से उन्होंने सम्पूर्ण पृथ्वी को निशाचरों से मुक्त कराने के अभियान की शुरूआत की थी। बक्सर की यह भूमि प्रथम मनुज अवतार श्री वामनदेव का जन्मस्थान भी है।

भगवान श्री राम ने एक राजा के रूप में जिस राज्य व्यवस्था को स्थापित किया था, उसे हम रामराज्य कहते हैं। यह सुशासन का आदर्श एवं सार्वकालिक प्रारूप है। रामराज्य में सब लोगों के सम्मान एवं समदृष्टि पर आधारित लोक कल्याण तथा शोषितों एवं वंचितों को सामाजिक एवं राजनीतिक मुख्यधारा से जोड़ने की व्यवस्था थी। राजा राम के राज्य में कोई भी भूखा–नंगा नहीं होता था। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, प्रकृति एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के अस्तित्व एवं कल्याण के दृष्टिकोण से यह व्यवस्था वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है।

मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम के जीवन संदर्भ में ऐसे तत्व हैं जिसके आधार पर वर्तमान समय में समाज, राष्ट्र और मनुष्य के सामने खड़े अस्तित्व संकट की समस्या का समाधान संभव है। आमजन की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए श्री राम द्वारा स्थापित नीतियाँ सभी कालों में प्रासंगिक हैं।

मैं यहाँ पधारे संत जनों को नमन करता हूँ जो अपने त्याग, साधना एवं दिव्य ज्ञान के माध्यम से मानवता के कल्याणार्थ एवं भारतीय संस्कृति के उन्नयन हेतु सतत प्रयत्नशील हैं। श्री राम के दिव्य संदेशों के आधार पर समर्थ भारत के पुनर्निर्माण के संकल्प बीज के अंकुरन, प्रस्फुटन एवं विकास हेतु इन संतों का सानिध्य, संरक्षण एवं प्रेरणा अत्यंत आवश्यक है।

श्री राम कर्मभूमि न्यास ने इस आयोजन के माध्यम से श्री राम के दिव्य व्यवहार व मर्यादा को लोक जीवन में उतारने का जो प्रयास किया है, वह अत्यंत सराहनीय है। विगत 07 नवम्बर से चल रहे इस विराट सांस्कृतिक–आध्यात्मिक समारोह के आयोजन से जुड़े सभी महानुभावों को मैं साधुवाद देता हूँ।

बहुत–बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द।

***